हिन्दी विभाग

दिनांक 12/09/2020

स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध

पत्र संख्या - 06

* मीरा की निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर:- हरि आप हरो जन री भीर ।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर ।
भगत कारण रूप नरहरि धरयो आप शरीर

इन पंक्तियों में भगवान के महात्म्य का वर्णन है ऐसा माना जाता है कि भगवान हर किसी के दुःख को दूर करते हैं। जब द्रोपदी पर गहरा संकट आया था, उनकी लाज पर खतरा था तब भगवान ने उन्हें कभी न खत्म होने वाली साड़ी प्रदान करके उनकी लाज बचाई थी। भगवान अपने भक्तों को दुःख दूर करने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते है। प्रह्लाद की जान बचाने के लिए तो भगवान ने नरसिंह का शरीर धारण कर लिया था और बचा लिया। उसी प्रकार मीरा ~~की~~ भी कृष्ण से ~~क~~ चाहती उनके दुःख को भी दूर करें।

बूढ़ते गजराज राख्यो, काटी कुञ्जर पीर,
दासी मीरा लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

मीरा ने उस घटना का उल्लेख किया है जब ऐरावत ~~एक~~ मगरमच्छ के चंगुल में फंस गया था

भगवान ने समय पर आकर ऐरावत की जान बचाई थी। मीरा चाहती है कि इसी तरह से भगवान भी आकर दुःख को दूर करें।

चाकरी में दरसण पास्यूं, सुमरण पास्यूं खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूं, तीनूं बातां सरसी॥

इस पंक्ति में भक्त की उस भावना का वर्णन है जब उसके मन में कोई भी छल कपट नहीं है बल्कि सिर्फ सीधी सी योजना है अपने आराध्य के दर्शन करने की। मीरा बताती है कि भगवान के यहाँ नौकरी करने से उन्हें क्या-क्या लाभ मिलने वाला है। भगवान की नौकरी करते-करते उन्हें मुफ्त में ही भगवान के दर्शन होंगे। भगवान के सुमिरन का मौका तो जैसे जेब खर्च के समान होगा। और इन सब के कारण जो भक्ति उन्हें प्राप्त होगी वह तो उनके लिए किसी भी जागीर से कम नहीं होगी।

वे कृष्ण को पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है

मीरा वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती है, ऊँचे-ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती है ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सके। वे उनके दर्शन के लिए कुसुम्बी रंग के साड़ी पहनकर यमुना के तट पर आधी रात को प्रतीक्षा करने को तैयार है।

इसलिए मीरा का जीवन प्रारंभ से ही कृष्ण भक्ति से प्रेरित रहा, वे जीवन भर बावजूद विषम परिस्थितियों में कृष्ण भक्ति में लीन रही। कोई भी बाधा उनका मन कृष्ण भक्ति से विमुख नहीं कर सकी कृष्ण भक्ति में रत रहकर वे अमर हो गई आज भी उनका नाम पूरी श्रद्धा, आदर और सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है।

प्रस्तुत कर्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० - 829227104)
ईमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक
12/09/2020